

# गो-कृपा अमृतम

(कल्चर और बैक्टीरिया)



बंसी गीर गोशाला

**गो-कृपा कृषि पद्धति - यूरिया, डीएपी, पेस्टिसाइड का असरकारक विकल्प,  
"गो-कृपा अमृतम" द्वारा ५ सरल चरणों में सफल और समृद्ध खेती।**

वेदों में स्पष्ट रूप से कहा गया है की जैसी गोमाता की स्थिति वैसी हमारी स्थिति। हमारे गुरुदेव भी स्पष्ट रूप से कहते थे की जब तक गाय और किसान दुखी हैं तब तक देश कभी खुश नहीं रह सकता। बहुत विचार, अनुसंधान और परीक्षण के बाद, गुरु, गोविंद और गोमाता के आशीर्वाद से, हमने एक बहुत ही सरल और सस्ती पद्धति विकसित की है। हमारा विश्वास है कि यह पद्धति किसी भी किसान को आत्म-सम्मान के साथ सफलतापूर्वक खेती करने में सक्षम बनाएगी। इस विधि को गोमाता के प्रसाद रूपी गो-कृपा अमृतम बैक्टीरियल कल्चर की मदद से संभव बनाया गया है, इसलिए हमने इसे "गो-कृपा कृषि पद्धति" का नाम दिया है।

## गो-कृपा अमृतम् - बैक्टीरियल कल्चर क्या है?

गो-कृपा अमृतम प्राकृतिक गाय आधारित पदार्थों और अन्य जड़ी-बूटियों के उपयोग से निर्मित मिला जीवी किटाणुओं का मिश्रण (कल्चर) है, जो हमारे विस्तृत अनुसंधान और परीक्षण का परिणाम है।

गो-कृपा अमृतम के लाभ इस प्रकार हैं - संक्षिप्त में (अधिक जानकारी हेतु हमारी वेबसाइट या YouTube चैनल को देखें) -

- १) धरती में मिला सूक्ष्म मिलाजीवों का संचार करता है जो धरती की उर्वरता तथा पौधे के स्वास्थ्य में वृद्धि करता है।
- २) वनस्पति को धरती से पोषक तत्व सुपाच्य स्वरूप में उपलब्ध कराता है। वनस्पति की रोग प्रतिकारक शक्ति और गुणवत्ता बढ़ाता है।
- ३) धरती ज्यादा नरम बनती है - बारिश का पानी ज्यादा अच्छी तरह से सोख लेती है - और समय के साथ खेती में पानी की आवश्यकता कम होती है। धरती में भूजल का प्रमाण बढ़ता है। खेत में केचुओं एवं मधुमक्खियों की वृद्धि के लिए अनुकूल वातावरण का निर्माण करता है।
- ४) किसान कम से कम खर्च कर के स्वाभिमान से गौ आधारित खेती कर सकता है। यह सभी प्रकार की फसलों में बहुत उपयोगी है।

गो-कृपा अमृतम भारत के किसानों को निःशुल्क दिया जा रहा है। अगर इस उत्पाद के लिए कोई धन राशि लेता है तो हम कानूनी कार्यवाही करेंगे। हम किसानों को बिनती करते हैं की गो-कृपा अमृतम का उपयोग अपनी ज़मीन के एक भाग में करें। उसके परिणाम देखने के बाद अपनी बाकि की ज़मीन पर इसका प्रयोग करें। इस उत्पाद के उचित प्रयोग से कोई हानि नहीं है।

गो-कृपा अमृतम दिव्य गोमाता की कृपा है। हमारी नम्र बिनती है की हम इस वस्तु का प्रयोग गोमाता को वंदन करके करें और समृद्ध बनें।

## गो-कृपा अमृतम से बने द्रावण की विशेषताएं

हरित क्रांति के पहले १९७० में १ ग्राम मिट्टी में २ करोड़ से अधिक उपयोगी सूक्ष्म जीवाणु पाये जाते थे। पर अब इसके २०% से भी कम बचे हैं। चाहे मानव शरीर हो या धरती, यह मिला सूक्ष्म कीटाणु स्वास्थ्य के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।

गो-कृपा अमृतम में ७० से अधिक प्रकार के मिला बैक्टीरिया (मिला सूक्ष्म जीवाणु) हैं जो धरती में अत्यंत उपयोगी हैं। इसमें एरोबिक (aerobic, वायुजीवी) तथा एनेरोबिक (anaerobic, वात निरपेक्ष जीवाणु) सूक्ष्म मिला जीवाणुओं का संतुलित संयोजन उपस्थित है। इन में अधिकतर -

२४ प्रकार के बैक्टीरिया ऐसे हैं जो हवा में से नाइट्रोजन लेकर सुपाच्य स्वरूप में जड़ों को उपलब्ध करते हैं। इस लिए किसानों का यूरिया का खर्च बच जाता है।

कुछ बैक्टीरिया ऐसे हैं जो रोग नियंत्रक और किट नियंत्रक का काम करते हैं।

ऐसे बैक्टीरिया जिन्हें वैज्ञानिक भाषा में जिओ बैक्टीरिया कहते हैं। यह बैक्टीरिया गोमय, गोमूल और धरती में रहे धातु और खनिज पदार्थों को सुपाच्य स्वरूप में जड़ों को उपलब्ध करते हैं।

यह द्रावण में सल्फर की आपूर्ति करने वाले काफी बैक्टीरिया उपस्थित हैं जो हर प्रकार की फसल में बहुत उपयोगी हैं।

कई बैक्टीरिया ऐसे हैं जो खाद को कम्पोस्ट करने का काम करते हैं। लैक्टोबैसिलस बैक्टीरिया जो पौधे और फल के विकास में अच्छा कार्य करते हैं।

फॉस्फोरस पे काम करने वाले बैक्टीरिया जो फॉस्फोरस को सुपाच्य रूप में पौधे को उपलब्ध करते हैं।

इस द्रावण में ऐसे बैक्टीरिया उपस्थित हैं जो रोग फैलाने वाले किटाणुओं को नियंत्रित करते हैं। इसके कारण छाव में खुले में रखने से भी इसकी असरकरकता बनी रहती है। इसके परिणामस्वरूप इसका पूरे भारत में प्रसार करना सरल रहता है।

**विशेष सूचना -**

१) गो-कृपा अमृतम में रहे मिल सूक्ष्म कीटाणुओं को देसी गाय का ही छाछ, गोबर और गोमूल पसंद है, इसी लिए आपको देसी गाय के पंचगव्यों के साथ ही सबसे उत्तम परिणाम मिलेंगे। इस लिए भैंस या विदेशी गाय के गोबर का उपयोग नहीं करना है। इस लिए हमारी बिनती है की अगर आप के पास देसी गाय नहीं है तो किसी गौशाला से देसी गाय का खाद खरीद कर उपयोग कीजिये। और अगर आप देसी गाय रखते हैं तो उसे ज़्यादा सरलता से संभाल सकेंगे। आप की यूरिया और DAP सब्सिडी से आप गाय के लिए दाना (कंसन्ट्रेट फीड) खरीद सकते हैं। आप वीडोसाइड का उपयोग न करके पाक के बीच उगा रहे जंगली घास अपनी गाय को खिला सकते हैं। खेत के किनारे आप गोमाता को खिलाने के लिए सहजन उगा सकते हैं, नेपियर, जिन्जवा जैसे घास उगा सकते हैं।

२) किसान भाइयों से बिनती है की वह गो-कृपा अमृतम का उपयोग अपनी ज़मीन के एक हिस्से में करे, और उसके परिणाम के अनुसार बाकि की ज़मीन में उपयोग करना शुरू करे। उदारहरण स्वरूप, अगर आप के पास २० एकर ज़मीन है तो पहले आप आधे एकर ज़मीन में उपयोग करें। अगर आप को सफल परिणाम प्राप्त हो तो बड़े पैमाने पर गाय रख कर स्वाभिमान के साथ स्वनिर्भर हो कर खेती करें।

३) खेत में डांगर, गेहूँ और अन्य फसल लेने के बाद फसल के बाकि का हिस्सा जलाया जाता है जिससे धरती में मिल जीवों का नाश होता है। ऐसा न करके इसे पलटी मार के गो-कृपा अमृतम छिड़क देंगे तो वह बैक्टीरिया का खुराक बनकर अच्छी खाद बनेगा, किसान को अच्छा लाभ होगा और प्रदुषण भी नहीं होगा।

## गो-कृपा अमृतम - ५ चरणों में उपयोग की सरल विधि

### पहला चरण (1st step) - गो-कृपा अमृतम की वृद्धि कैसे करेंगे?

पहले चरण में आपको २०० लिटर पानी का ड्रम लेना है। अच्छे से साफ करके ड्रम में २०० लिटर पानी भर देना है। ड्रम एकदम साफ होना चाहिए। अंदर कोई तेल या केमिकल कुछ लगा नहीं होना चाहिए।

एक बाल्टी में थोड़ा पानी लेकर उसमें २ किलो गुड़ मिलाकर गुड़ का पानी बनाकर वह २०० लिटर में डाल देना है। २ लिटर देसी गोमाता से प्राप्त हुई ताज़ी छाछ लें। इसे ड्रम में डाल दें। इस में १ लिटर गो-कृपा अमृतम डाल दें। छाछ बनाने की रीत - देसी गोमाता के दूध से मिलाए हुए १ लीटर दही में २ लीटर पानी डालकर बिलोना करके मक्खन प्राप्त करें। बची हुए छाछ गो-कृपा कृषि में उपयोग हेतु सब से श्रेष्ठ है।

ड्रम आपको किसी पेड़ की छांव के नीचे रख देना है। उसे सूती कपड़े से ढक देना है ताकि अंदर कोई जीव या कचरा न पड़े। अगर कोई पेड़ नहीं है तो ग्रीन नेट के नीचे रख सकते हैं। वर्षा ऋतु में इसे बारिश के पानी से बचा कर रखना है।

साफ-सुथरे लकड़े से ७ दिनों तक रोज १ मिनट घड़ी की दिशा में हिलाएँ। ५ से ७ दिन में आपका गो-कृपा अमृतम तैयार हो जाएगा। अगर आपको हर रोज इसे हिलाने में दिक्कत हो रही है तो मछली घर में हवा छोड़ने वाला २०० से ३०० रुपये का एक छोटा सा मशीन आता है। इसे ड्रम पर लगा देंगे तो एक हफ्ते से कम समय में भी गो-कृपा अमृतम कल्चर तैयार हो सकता है।

जैसे दही के जामन से आप और अधिक दही बना सकते हैं वैसे ही इस जामन के उपयोग से आप और गो-कृपा अमृतम बना सकते हैं। इस ड्रम में से गो-कृपा अमृतम उपयोग करते करते सिर्फ १० लिटर जब बचता है तो वापस अंदर २०० लिटर पानी, २ किलो देसी गुड़ का पानी और २ लिटर देसी गोमाता से प्राप्त हुई ताज़ी छाछ डाल दें। एक हफ्ते में वह पुनः २०० लिटर बन जाएगा।

इस द्रावण का ७ दिन के बाद उपयोग कर सकते हैं, १ महीने के बाद कर सकते हैं, २ महीने, ६ महीने, हमने तो १ साल पुराना भी उपयोग करके देखा है, इसकी प्रभावशीलता कम नहीं होती है। लेकिन एक महीना अगर कोई पेड़ के नीचे पड़ा रहा है तो आपको हर महीने उसमें १ किलो गुड़ और १ लिटर देसी गोमाता की ताज़ी छाछ डालना अतिआवश्यक है ताकि उसे खुराक मिलता रहे।

गो-कृपा अमृतम साल में ४ बार रंग बदलता है। कभी पुराना हो गया तो हरा रंग हो सकता है, फिर थोड़ा काला रंग भी पड़ सकता है, लेकिन गुण नहीं बदलता है तो रंग बदलना चिंता का विषय नहीं है। कभी अंदर छोटे-मोटे जीव भी पड़ सकते हैं तो उसको छान के खेत में उपयोग कर सकते हैं।

उसकी खुशबू थोड़ी अलग अलग हो सकती है लेकिन गुण बदलता नहीं है। कभी कभी उस में बुलबुले भी आ सकते हैं। ऊपर हल्की सी जारी भी हो सकती हैं। अगर जारी न भी हो तो भी चिंता का विषय नहीं है, क्योंकि उसका गुण बदलता नहीं है।

**विशेष सावधानी** - आपको हम से या किसी अन्य किसान या संस्था से जब गो-कृपा अमृतम प्राप्त होता है तो ध्यान रखें की बॉटल के ढक्कन में छेद हो। बेक्टेरिया को जीवित रहने के लिए हवा मिलना अति आवश्यक है। इसी तरह जब आप अन्य किसान को गो-कृपा अमृतम देते हैं तो बॉटल में छेद करके ही दें।

## दूसरा चरण (Step 2) - गो-कृपा अमृतम से देसी गाय का गोबर कंपोस्ट करने की विधि

1000 किलो गोबर की 2 फीट ऊंची और 2.5 फीट चौड़ी लंबी लाइन कर दीजिए। जब हम गोबर की बात करते हैं तो देसी गोमाता का गोबर ही लेना है, क्योंकि सिर्फ देश गोमाता के गोबर में ही 1200 से अधिक कंपाउंड (compound) होते हैं और देसी गोमाता के गोमूल में ही 5100 से अधिक कंपाउंड होते हैं। इतने अधिक पोषक तत्व विदेशी गाय, बकरी या भेंस के गोबर में या सूखे पत्तों में उपस्थित नहीं होते।

इस लाइन के ऊपर बंबू से अलग-अलग जगह पर ज्यादा से ज्यादा छेद बना दीजिए और ऊपर 100-200 लीटर गो-कृपा अमृतम् छिड़क दीजिए और इसमें नमी बनाए रखें। नमी बनाए रखने के लिए आप इसके ऊपर ड्रिप भी लगा सकते हैं। हर 15 दिन के अंतराल में गोबर को पलटा कर वापिस छेद करके गो कृपा अमृतम् डालें। और यह किसी पेड़ की छांव में आपको लाइन लगानी है या फिर ग्रीन नेट लगाकर के नीचे रख सकते हैं। सिर्फ 60 दिन में उत्तम गुणवत्ता वाला वर्मीकम्पोस्ट जैसा खाद बन जाएगा। अगर उससे जल्दी भी आपको चाहिये तो उसको खाप लगा कर के थोड़ा गो-कृपा अमृतम् वापस अंदर डालते जाइए और उलट-पलट करते रहिए। सर्वश्रेष्ठ परिणामों के लिए हर 5-7 दिन आवश्यकता अनुसार 100-200 लिटर गो-कृपा अमृतम् डाल कर नमी बनाए रखें और 60 दिवस में कुल मिला कर प्रति टन 1000-2000 लिटर गो-कृपा अमृतम् से कॉम्पोस्ट करे।

देसी गाय के गोबर के साथ खेत के सूखे घास या पत्ते भी कॉपोस्ट करने के लिए इसका उपयोग हो सकता है। यह खाद ठंडी प्रक्रिया (cold-process) से बनेगा जिसके परिणाम स्वरूप बहुत ही सरलता से सुपाच्य स्वरूप में माइक्रोन्यूट्रिशन बने रहेंगे। कई बार किसानों के पास कॉपोस्ट खाद तैयार नहीं होता, तो ऐसे समय गोबर गेस की स्लरी गो-कृपा अमृतम के साथ मिला कर पानी के साथ खेत में बहा सकते हैं। आप अलग से भी स्लरी बना सकते हैं। स्लरी बनाने के लिए 25% गो-कृपा अमृतम्, 25% देशी गोमाता का ताज़ा गोबर और बाकी गोमूल तथा पानी लेकर 20 दिन तक ढँक कर रख दीजिए। 20 दिन के बाद इसका उपयोग कर सकते हैं। हम एक एकड़ ज़मीन के लिए एक से दो गोमाता रखने की सलाह देते हैं। एक गोमाता वर्ष में कम से कम 4 टन गोबर देती है और 8000 लिटर गोमूल देती है। अगर कहीं छोटी नस्ल की गोमाता है तो 2-4 गोमाता का गोबर लेना है तो यही हो जाएगा और यह खाद तैयार होने के बाद छांव में ही रखना है।

**विशेष ध्यान** - यह गो-कृपा अमृतम द्वारा कॉपोस्ट हुआ खाद आपको खेत के चास (फसल की लाइन) में डालना है। चास में डालेंगे तो आजू बाजू की खरपतवार को खाद नहीं मिलेगा वह धीरे-धीरे कंट्रोल होंगे और जिसको चाहिए उसी को खाद मिलेगा। बारिश के पहले या बुवाई के पहले जब भी आप डालते हैं तो १० से १५ दिन पहले ही डाल कर रख सकते हैं। थोड़ी मिट्टी भी उसके पर लगा सकते हैं, धूप में खुला छोड़ने से उसकी गुणवत्ता कम होने लगती है, काफी कंपाउंड चले जा सकते हैं। इसीलिए नम्र विनंती है कि पूरी प्रक्रिया का सही तरीके से अनुकरण करें।

## चरण तीसरा (Step 3) गो-कृपा अमृतम खेत में कैसे और कितना डालना है?

हर महीने कुल मिला कर कम से कम २००० लीटर प्रति एकड़ गो-कृपा अमृतम् खेत में जाना चाहिये। अर्थात यदि आप महिना में २ बार पानी देते हैं तो हर बार १००० लीटर देना है, चार बार देते हैं तो हर बार ५०० लीटर, पाँच बार देते हैं तो हर बार ४०० लीटर, आदि। अगर आप ड्रिप से देते हैं तो भी गो-कृपा अमृतम् देना काफी सरल है। इसे छानने की आवश्यकता नहीं है। सीधा वेंचुरी लगा देंगे तो ड्रिप में बहुत सहजता से बैक्टीरिया बह जाएगा। बैक्टीरिया की वजह से ड्रिप में क्षार जमने की समस्या भी कम हो जाएगी। उसी तरह गो कृपा अमृतम् स्प्रींकलर और फ़्लड इरीगेशन से भी बहुत आसानी से दे सकते हैं। इसको ड्रिप में भी वेंचुरी लगा कर के आप दे सकते हैं, स्प्रींकलर के फव्वारे में भी बहुत सरलता से इसका उपयोग वेंचुरी के द्वारा हो सकता है। फ़्लड इरीगेशन मतलब धोरीये (नाली) में पानी सीधा बहाते है तो उसमें भी आप चकली चालू करके सीधा ड्रम में पानी के साथ बहा सकते हैं।

## चरण चौथा (Step 4) किट नियंत्रक के रूप में इसका कैसे उपयोग करें?

३ लीटर गो-कृपा अमृतम्, ३ लिटर देशी गोमाता की ताजी छाछ और बाकी का पानी लेकर १५ लिटर का पम्प तैयार करें। लगभग एक एकड़ में १०-१५ पम्प आपकी आवश्यकता अनुसार हर हफ्ते डाल देना है। अधिक अच्छे परिणामों के लिए हर १५ दिन इसमें २०० एमएल दूध डाल सकते हैं। दूध डालने के तुरंत बाद स्प्रे कर दें जीससे दूध के फटने से पंप जम कर खराब न हो। अगर आपका कोई फसल जटिल है जैसे भिंडी, मिर्ची आदि तो उसमें हर दो-तीन दिन में केमिकल का उपयोग होता है। उसकी जगह हर दो-तीन दिन पर गो-कृपा अमृतम् का स्प्रे कर देना है। जैसा कि हमने आयुर्वेद से सीखा है कि हो सके तो ऐसी परिस्थिति का निर्माण हो की रोग आए ही नहीं। गो-कृपा अमृतम् का स्प्रे या छिड़काव इसी दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। इसमें ऐसे बैक्टीरिया है जो अपने शरीर से ऐसे एन्ज़ाइम या रस छोड़ते हैं जिसकी वजह से बेकाम के कीट और कीटाणु वनस्पति से दूर भागते हैं। इसलिए ऊपर दी गई पद्धति से गो-कृपा अमृतम् का नियमित छिड़काव करना आवश्यक और लाभदायक है। इसे

पौधे के जीवन काल के कौन से चरण (स्टेज) पर डालना है? जैसे अभी बुवाई हुई है उससे पहले इस को बीज के पड देने में भी उपयोग कर सकते हैं, बीज संस्कार में भी उपयोग कर सकते हैं, बुवाई के समय, १५ दिन की फसल, फ्लावरिंग स्टेज (जब फूल आते हैं), फल का स्टेज, कटिंग का स्टेज, कभी भी किसान मित्र डाल सकते हैं। इसके कोई साइड इफेक्ट या अनचाहा असर नहीं है। फंगस, दीमक या विडलिंग की समस्या के लिए आप ऊपर दी गई विधि अनुसार तैयार किए गए पंप में 1 चम्मच हल्दी और 1 चम्मच हिंग मिला कर 2-4 घंटे बाद स्प्रे करें। इसके उपरांत इस समस्या के लिए गो-कृपा अमृतम् के ड्रम में भी 10 चम्मच हल्दी और 2-3 चम्मच हिंग डालकर कुछ समय रख कर पानी के साथ दे सकते हैं। मिट्टी में पोटाश के अभाव तथा दीमक की समस्या के लिए गो-कृपा अमृतम् के ड्रम में १५-२० किलो अर्क के पत्ते और डालियाँ (आंकड़ा, वैज्ञानिक नायक asclepias procera) डाल कर ५-७ दिन के बाद खेत में बहा दीजिए।

## चरण पांचवा (Step 5) आपातकालीन किट नियंत्रण

कभी-कभी कोई फसल में बहुत जटिल रोग आ जाते हैं जो सिर्फ २ लीटर गो-कृपा अमृतम् से नहीं जा रहे हैं तो एक आपको आपात कालीन (इमरजेंसी) में उपयोग करने की विधि हम बताते हैं।

- आपके खेत में कहीं मटके में या ड्रम के अंदर देशी गोमाता से प्राप्त हुई छाछ भर के रख दीजिए। इसके अंदर तांबे के टुकड़े (कॉपर) डाल दीजिये।
- उसको पुरानी होने दीजिए। ४० दिन के बाद पुरानी छाछ तैयार हो जाएगी और इस छाछ में तांबे के गुण आ जाएंगे।
- १५ लीटर के पम्प में २०० ml से लेकर २ लीटर जितनी तांबे वाली ४०-दिन से अधिक पुरानी छाछ लेनी है, २ लीटर गो-कृपा अमृतम् लेना है और २०० ml से लेकर २ लीटर ताजा गोमूत्र लेना है। गोमूत्र पुराना नहीं लेना है, ताजा गोमूत्र ही लेना है। और बाकी का ९ से १२.६ लीटर पानी मिला के प्रयोग करें। सामान्यतः पुरानी छाछ और ताजा गोमूत्र छोटे पौधों के लिए आप कम मात्रा का प्रयोग करें और बड़े पौधों और वृक्षों के लिए अधिक मात्रा में लें। पुरानी छाछ और ताजा गोमूत्र का प्रमाण धीरे धीरे बढ़ा सकते हैं और २-२ लीटर तक प्रयोग कर सकते हैं।
- सबसे पहले १०-२० पौधों पर प्रयोग करें। आपको सटीक परिणाम दिखाई देगा और फिर इसे पूरे खेत में उपयोग किया जा सकता है। अगर इस से आपको संतोष कारक परिणाम नहीं मिलता है तो आप गो-कृपा अमृतम्, ४० दिन पुरानी तांबे वाली छाछ और ताजा गोमूत्र के साथ लहसुन और मिर्ची भी जोड़ सकते हैं। जैसे ही कीट या बीमारी नियंत्रण में आ जाति है, तुरंत इस प्रयोग को रोक दें और चौथे नियम के अनुसार स्प्रे करें।
- कभी कभार आपके फसल में बहुत फंगस लगी है या पत्ते के ऊपर वायरस लगा हुआ है तो यह छिड़कने से शायद कुछ पत्ते मुरझा जाए, तो वापस उसमें से नए पत्ते आएंगे। तो यह चिंता का विषय नहीं है।

सर्व श्रेष्ठ परिणामों के लिए - रासायनिक खेती की तुलना में 50-150% अधिक उत्पादन लेने के लिए ऊपर दिए गए प्रोटोकॉल से 3 गुने गो-कृपा अमृतम् से कॉम्पोस्ट किया खाद (२५-३० टन प्रति एकड़) और ३ गुने बैक्टेरिया (पानी के साथ एवं स्प्रे में) का उपयोग करें। भारत के विविध राज्यों में प्रगतिशील किसानों द्वारा इस पद्धति से प्राप्त हुए उत्कृष्ट परिणामों के उदाहरण हमने हमारी पुस्तक में दिए हैं जो आप हमारी वेबसाइट [www.bansigir.in](http://www.bansigir.in) से निःशुल्क डाउनलोड कर सकते हैं।

### गोकृपा अमृतम्

अधिक जानकारी के लिए अवश्य देखे



**You Tube**

Gopalbhai Sutariya  
Bansigir Gaushala



**फ्री पुस्तक**  
डाउनलोड लींक

<https://www.bansigir.in/download-book>



बंसी गीर गोशाला

बंसी गीर गोशाला, मेट्रो होलसेल सर्विस रोड, शांतिपुरा सर्कल, सरखेज, अहमदाबाद - ३८२२१०. गुजरात, भारत.

संपर्क - सोमवार से शनिवार सुबह १०.०० से शाम ६.०० बजे तक

फोन : 6351978087, 9316746990, 6351000349, 9313802245, 7487064395

✉ [info@bansigir.in](mailto:info@bansigir.in) • [www.bansigir.in](http://www.bansigir.in) • [www.gaukrupaamrutam.com](http://www.gaukrupaamrutam.com) • [bansigirgaushala](https://www.bansigirgaushala.com) • [bansigir](https://www.bansigir.in)